DX-1601030401040400 Seat No. _____

B. A. (Sem. IV) (CBCS) Examination

April – 2022

Hindi

(आधुनिक हिन्दी काव्य धनुषभंग एवम् व्याकरण) (New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (1) सभी प्रश्नों के अंक समान है ।

(2) कोई भी पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1 हिन्दी खंडकाव्य के उद्‌भव एवम् विकास का सविस्तर चर्चा कीजिए । **14**

2 'धनुषभंग' खंडकाव्य की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए । **14**

3 खंडकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'धनुषभंग' खंडकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । **14**

4 किशोर काबरा का सामान्य परिचय देकर उनका साहित्यिक यात्रा का वर्णन कीजिए । **14**

5 भावपक्ष एवम् कलापक्ष की दृष्टि से 'धनुषभंग' खंडकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । **14**

6 'धनुषभंग' खंडकाव्य में व्यक्त आधुनिक भावबोध को प्रस्तुत कीजिए । **14**

7 'धनुषभंग' खंडकाव्य में व्यक्त समस्याओं को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत कीजिए । **14**

8 'धनुषभंग' खंडकाव्य में इतिहास एवम् कल्पना का सुंदर समन्वय हुआ है । सिद्ध कीजिए । **14**

9 संक्षिप्त टीप्पणी : **14**

(1) 'धनुषभंग' खंडकाव्य की संवाद योजना

(2) 'धनुषभंग' खंडकाव्य की मिथकीयता ।

10 व्याकरण (प्रेसनोट एवम् अनुवाद) **14**

– प्रेसनोट : आपकी संस्था में आयोजित सांस्कृतिक महोत्सव की प्रेसनोट तैयार कीजिए ।

– अनुवाद : निम्न लेखन का गुजराती में अनुवाद कीजिए ।

– रस को काव्य की आत्मा या प्राणतत्व माना गया है । रसहीन काव्य नीर्जिव है । अतः रस के बीना काव्य का अस्तित्व ही नहीं है । जैसे प्राण के अभाव में शरीर व्यर्थ है, उसी प्रकार रस के अभाव में कोई रचना काव्यत्व से ही रहीत हो जाती है । रस ही कविता को प्राणवान बनाता है । और वही पाठक या श्रोता को आनन्दमान करके भाव समाधि में पहुँचा देता है । अतः रस को काव्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना जा सकता है । यह काव्य को अन्तरंग तत्व है, बहिरंग तत्व नहीं । अतः अलंकार आदि की भांति यह काव्य की शोभा नहीं बढाता, अपितु शोभा उत्पन्न करता है । काव्य के अन्य सभी तत्व रस के ही उपादान है । अतः निर्विवाद रूप में रस ही काव्य का सर्वप्रमुख तत्व है ।

———————